



ऋग्वेद मण्डल-3

ऋग्वेद मन्त्र 3.9.1

Rigveda 3.9.1

सखायस्त्वा ववृमहे देवं मर्तास ऊतये।

अपां नपातं सुभगं सुदीदितिं सुप्रतूर्तिमनेहसम्॥

(सखायः) मित्र (त्वा) आपको (ववृमहे) स्वीकार और धारण करते हैं (देवम्) दिव्य (मर्तासः) मरने के योग्य मनुष्य (ऊतये) संरक्षण के लिए (अपाम् नपातम्) कर्मों के फल को अस्वीकार नहीं करने देता, शुद्ध करने वाले जल (सुभगम्) सुन्दर सौभाग्य वाला (सुदीदितिम्) सर्वोत्तम प्रकाश से भरपूर (सु प्रतूर्तिम्) अज्ञानता का नाश करने के लिए त्वरित कार्य करता है (अनेहसम्) शुद्ध करने वाला और शान्ति देने वाला।

नोट :- यह मन्त्र सामवेद 62 के समान है जिसमें ऋग्वेद 3.9.1 में व्यक्त 'सुदीदितिम्' के स्थान पर 'सुदंससं' आया है। 'सुदंससं' का अर्थ है उत्तम कार्यों को करने वाला। अतः बिन्दु संख्या-4 इस अर्थ के अनुसार बदल जायेगा।

व्याख्या :-

हम परमात्मा को एक मित्र की तरह क्यों स्वीकार और धारण करते हैं?

एक मरणशील व्यक्ति आपको, सर्वोच्च दिव्य को, एक मित्र की तरह निम्न कारणों से स्वीकार और धारण करता है :-

1. (ऊतये) संरक्षण के लिए,
2. (अपाम् नपातम्) कर्मों के फल को अस्वीकार नहीं करने देता, शुद्ध करने वाले जल,
3. (सुभगम्) सुन्दर सौभाग्य वाला,
4. (सुदीदितिम्) सर्वोत्तम प्रकाश से भरपूर,
5. (सु प्रतूर्तिम्) अज्ञानता का नाश करने के लिए त्वरित कार्य करता है,
6. (अनेहसम्) शुद्ध करने वाला और शान्ति देने वाला।

जीवन में सार्थकता :-

एक श्रेष्ठ दिव्य मित्र के क्या कर्तव्य होते हैं?

हम परमात्मा को संरक्षण के लिए, शुद्धि के लिए और संवर्द्धन के लिए एक मित्र की तरह स्वीकार करते हैं और धारण करते हैं। इस सिद्धान्त को समाज में लागू करते हुए, हमें इन्हीं उद्देश्यों से मित्र बनाने चाहिए। हमें स्वयं भी संरक्षण, शुद्धि और संवर्द्धन के कर्तव्यों के साथ ही अपनी मित्रता दूसरों को देनी चाहिए। केवल इन्हीं कर्तव्यों के साथ समाज एक श्रेष्ठ और दिव्य मित्रता की अवधारणा को लागू कर पायेगा।

सूक्ति :- (सखा त्वा ववृमहे देवम् मर्तासः। ऋग्वेद 3.9.1 और सामवेद 62)

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 3.9.2
Rigveda 3.9.2

कायमानो वना त्वं यन्मातृरजगन्नपः ।
न तत्ते अग्ने प्रमृषे निवर्तनं यद् दूरे सन्निहाभवः ॥

(कायमानः) इच्छ करते हुए (वनाः) श्रद्धा, ज्ञान, प्रकाश की किरणें (त्वम्) आप (यत्) जो (मातृ) माता के लिए (अजगन्) प्राप्त करता है, जानता है (अपः) प्रकाश, कार्य (न) नहीं (तत्) वह (ते) आपकी (अग्ने) ऊर्जा, आत्मा (प्रमृषे) अच्छा महसूस करना (निवर्तनम्) वापस आते हुए (यत्) जो (दूरे) दूर (सन) अत्यन्त (इह आभवः) आ गया है।

नोट :- यह मन्त्र सामवेद 53 के समान है।

व्याख्या :-

सूर्य से आती हुई ऊर्जा क्या इच्छा करती है?

जन्म लेती हुई आत्मा क्या इच्छा करती है?

श्रद्धा-भक्ति, प्रकाश और ज्ञान की किरणें आपकी (ऊर्जा, आत्मा की) इच्छा करते हुए जो प्रकाश के लिए और कर्मों के लिए माँ को प्राप्त करती है। वह आप जो अत्यन्त दूर से आते हो परन्तु कभी भी अच्छा महसूस नहीं करते, इसीलिए तुम वापस (अपने स्रोत में) चले जाते हो।

जीवन में सार्थकता :-

कौन अपने स्रोत लक्ष्य पर वापस जाने की इच्छा करता है?

धरती माता के पास आने वाली ऊर्जा की यह एक प्राकृतिक इच्छा और लक्ष्य होता है कि वह सबके कल्याण के लिए प्रकाश में परिवर्तित हो जाये।

किसी माँ के पास जन्म लेते हुए आत्मा की यह सामान्य इच्छा होती है कि कुछ कर्मों को करे और इस प्रकार उनके फल का आनन्द ले।

एक प्राकृतिक चक्र में ऊर्जा धरती माता पर सदैव नहीं रहना चाहती और इसीलिए वह अपने स्रोत सूर्य की तरफ चली जाती है।

इसी प्रकार केवल सच्ची और गहरी भक्ति ही आत्मा को अपने स्रोत गन्तव्य अर्थात् परमात्मा की तरफ जाने के लिए प्रेरित करती है। ऐसी आत्मा कभी भी अपने कार्यों के फलों का न तो आनन्द लेती है और न ही उनके साथ जुड़कर रहती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



उपभोक्तावाद और मनोरंजन की भोगवृत्ति एक श्रद्धालु भक्त के जीवन के लिए कोई महत्त्व नहीं रखती। इसलिए ऐसी आत्मा सदैव अपने स्रोत गन्तव्य की तरफ जाने के बारे में ही सोचती है और प्रयास करती रहती है।

भक्तिविहीन लोगों के लिए उपभोक्तावाद और मनोरंजन की भोगवृत्ति ही प्राथमिक उद्देश्य बन जाता है। ऐसी आत्मा अपने स्रोत गन्तव्य की तरफ जाने के बारे में कभी नहीं सोचती।

RV 3.16.1

ऋग्वेद मन्त्र 3.16.1

Rigveda 3.16.1

अयमग्निः सुवीर्यस्येशे महः सौभगस्य राय ईशे।
स्वपत्यस्य गोमत ईशे वृत्रहथानाम्॥

(अयम्) यह (अग्निः) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, नेतृत्व में प्रथम, अग्नि, ऊर्जा (सुवीर्यस्य) वीरों के बल वाला (ईशे) स्वामी, संरक्षक, पूजा के योग्य (महः) महान्, उत्तम (सौभगस्य) महान् सौभाग्य, प्रगतिशील (राय) गौरवशाली सम्पदा (ईशे) स्वामी, संरक्षक, पूजा के योग्य (स्वपत्यस्य) श्रेष्ठ और सुन्दर सन्तानों, अनुयायियों का (गोमत) दयालु, उदार, गऊओं का रखवाला (ईशे) स्वामी, संरक्षक, पूजा के योग्य (वृत्र हथानाम्) शत्रुओं (आन्तरिक और बाहरी) का नाशक।

नोट :- यह मन्त्र सामवेद 60 के अनुसार है जिसमें 'महः' शब्द नहीं है और 'हि' शब्द जोड़ा गया है। 'हि' का अर्थ है – निश्चित रूप से।

व्याख्या :-

हमारे जीवन में पूर्ण स्वामी और संरक्षक कौन है?

निश्चित रूप से वह सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, प्रथम अग्रणी, अग्नि, ऊर्जा हमारा स्वामी और संरक्षक है जो पूजा के योग्य है, क्योंकि :-

1. वह सुवीर्यस्य अर्थात् वीरों के बल वाला है,
2. वह सौभगस्य अर्थात् महान् सौभाग्य, प्रगतिशील है,
3. वह राय अर्थात् गौरवशाली सम्पदा है,
4. वह स्वपत्यस्य अर्थात् श्रेष्ठ और सुन्दर सन्तानों, अनुयायियों वाला है,
5. वह गोमत अर्थात् दयालु, उदार, गऊओं का रखवाला है,
6. वह वृत्र हथानाम् अर्थात् शत्रुओं (आन्तरिक और बाहरी) का नाशक है।

जीवन में सार्थकता :-

हमें अपने सर्वमान्य संगति वाले के प्रति लगातार चेतन क्यों रहना चाहिए?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जीव प्राणियों के द्वारा जो कुछ भी वांछनीय है वह अग्नि अर्थात् परमात्मा के ऊर्जा रूप से ही उत्पन्न होता है। प्रत्येक श्वास और प्रत्येक कण सर्वोच्च ऊर्जा की ही अभिव्यक्ति है। अतः उस सर्वमान्य संगति वाले के प्रति निश्चित रूप से हमारी लगातार चेतनता हमें प्रसन्न और संतुष्ट रख पायेगी, हमें शांति दे पायेगी और उस ऊर्जा रूप परमात्मा की अनुभूति के पथ पर प्रगतिशील करेगी।

ऋग्वेद मन्त्र 3.29.10 Rigveda 3.29.10

अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथाः।
तं जानन्नग्न आ सीदाथा नो वर्धया गिरः॥

(अयम्) यह (ते) आपका (योनिः) आवास (यह ब्रह्माण्ड, यह शरीर) (ऋत्वियः) प्रत्येक ऋतु में, प्रतिक्षण (यतः) जहाँ से (जातः) प्रकट हुए, उत्पन्न हुए (अरोचथाः) प्रकाशित (तम्) आपको (जानन्) जानते हुए (अग्ने) हे ऊर्जा (आसीद) बैठा, स्थापित (अथ) अब, अतः (नः) हमारे (वर्धया) वृद्धि (गिरः) वाणी (आपके महिमागान की)

नोट :- यह मन्त्र यजुर्वेद 3.14 में परिवर्तन के साथ आया है। यजुर्वेद 3.14 में 'आसीद' के स्थान पर 'आ रोह' तथा 'गिरः' के स्थान पर 'रयिम' का परिवर्तन है।

व्याख्या :-

परमात्मा, सर्वोच्च ऊर्जा, कहाँ पर रहते हैं?

यह ब्रह्माण्ड (शरीर) प्रत्येक ऋतु में और प्रत्येक क्षण आपका आवास हैं, जहाँ से आपका उदय होता है, आप प्रकट होते हो और प्रकाशित होते हो।

हे अग्नि! आपको जानते हुए ही हम आपको अपने अन्दर (अपने हृदय में) स्थापित करते हैं। अतः, कृपया हमारी वाणी को बढ़ाओ (आपकी महिमागान के लिए)।

जीवन में सार्थकता :-

हमारे कार्य परमात्मा के कार्य कैसे बन सकते हैं?

अपनी सम्पदा में वृद्धि करने के लिए हमें क्या प्रार्थना करनी चाहिए?

प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिक्षण यह चेतना रखनी चाहिए कि समूचा ब्रह्माण्ड और हमारा शरीर परमात्मा अर्थात् सर्वोच्च ऊर्जा का आवास हर समय के लिए है। वह ऊर्जा हमारे आस-पास हर स्थान पर और हमारे अन्दर उदय होती है, प्रकट होती है और प्रकाशित होती है। हमारे सभी कार्य उस ऊर्जा कार्य माने जाते हैं अर्थात् परमात्मा के, क्योंकि प्रत्येक कार्य ऊर्जा के साथ ही होता है और उस ऊर्जा के बिना कुछ भी सम्भव नहीं है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



केवल इस चेतना के साथ ही हमें भौतिक और आध्यात्मिक सम्पदा की प्रगति के लिए प्रार्थना करनी चाहिए जिससे हम यज्ञ कार्यों को कर सकें जो परमात्मा के कार्य बन जायें। केवल सकारात्मकता ही परमात्मा को प्रस्तुत की जाती है और उसके द्वारा स्वीकार होती है। अपने शरीर और मन की सभी नकारात्मकताओं का त्याग कर देना चाहिए। सभी स्वार्थी कार्यों और विचारों का त्याग कर देना चाहिए।

नोट :- यजुर्वेद 3.14 की दूसरी लाईन इस प्रकार है :- तं जानन्नग्न आरोहाथा नो वर्धया रयिम – इसका अर्थ है – हे अग्नि! आपको जानते हुए ही हम प्रगति करते हैं। अतः, कृपया हमारी सम्पदा (भौतिक एवं आध्यात्मिक) को बढ़ाओ।

ऋग्वेद मुख्यतः ज्ञान वेद है। इसलिए इस मन्त्र में परमात्मा को अपने हृदय में स्थापित करने की प्रेरणा है जो हमें ज्ञान और वाणी में संवर्द्धन प्रदान करे।

जबकि यजुर्वेद मुख्यतः कर्मवेद है, इसलिए इस मन्त्र में यज्ञों को सम्पन्न करने के लिए सम्पदा की प्रार्थना की गई है।

सूक्ति :-

(अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथाः। यजुर्वेद 3.14, ऋग्वेद 3.29.10)

यह ब्रह्माण्ड (शरीर) प्रत्येक ऋतु में और प्रत्येक क्षण आपका आवास है, जहाँ से आपका उदय होता है, आप प्रकट होते हो और प्रकाशित होते हो।

ऋग्वेद मन्त्र 3.62.10

Rigveda 3.62.10

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

नोट :- ऋग्वेद 3.62.10, यजुर्वेद 3.35, 30.2, 36.3, सामवेद 1462

(ओ३म्) ब्रह्माण्ड की ध्वनि जो सर्वत्र तरंगित है (परमात्मा का मूल नाम) (भूः) होना, कार्य करना, भूमि के नीचे (भुवः) ज्ञान प्राप्त करना (स्वाहाः) ब्रह्म की अनुभूति, अंतरिक्ष (तत्) वह (परमात्मा) (सवितु) निर्माता (परमात्मा), सूर्य (वरेण्यम्) वरण करने योग्य (भर्गो) प्रभाव, सर्वोच्च बुद्धि (देवस्य) दिव्य की, चाहने योग्य, प्रकाशित (धीमहि) हम एकाग्र करें और उस पर ध्यान करें (धियो) बुद्धियाँ (यः) जो (नः) हमारे (प्रचोदयात्) प्रेरित करें, उत्तम कार्यों के लिए ।

व्याख्या :-

वह (परमात्मा) धरती के नीचे है; वह वायु मण्डल में है; वह अंतरिक्ष में है। वह हमारा कार्य रूप है और हमारा लक्ष्य है, जो हम प्राप्त करना चाहते हैं; वह उस ज्ञान में है, जो हम अर्जित करना चाहते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



वह निर्माता वरण करने के योग्य है। हम उसके प्रभाव और उस सर्वोच्च दिव्य प्रकाशित और सर्वोच्च बुद्धि पर ध्यान एकाग्र करें और उसी पर ध्यान लगायें।

वह हम सबकी बुद्धियों को उत्तम कार्य करने के लिए प्रेरित करें।

यदि सविता को सूर्य माने तो एक वाक्य बनता है:- सूर्य का प्रभाव सर्वत्र विद्यमान, हमारे सभी कार्यों में, ज्ञान में और अनुभूतियों के पथ पर सूर्य वरण करने के योग्य है। हम उस सूर्य के प्रभाव पर अर्थात् सूर्य उदय की प्रातःकालीन किरणों पर ध्यान एकाग्र करें, जिससे हमारी बुद्धि उत्तम कार्यों के लिए प्रेरित हो।

जीवन में सार्थकता:-

गायत्री मन्त्र हमें क्या प्रेरणा देता है?

यह मन्त्र जीवन के तीन मूलभूत प्रश्नों का उत्तर देता है :-

1. वह (परमात्मा) धरती के नीचे है; वह वायु मण्डल में है; वह अंतरिक्ष में है। वह हमारा कार्य रूप है और हमारा लक्ष्य है, जो हम प्राप्त करना चाहते हैं; वह उस ज्ञान में है, जो हम अर्जित करना चाहते हैं।
2. हम उसके प्रभाव और उस सर्वोच्च दिव्य प्रकाशित और सर्वोच्च बुद्धि पर ध्यान एकाग्र करें और उसी पर ध्यान लगायें क्योंकि वह निर्माता वरण करने के योग्य है।
3. वह हम सबकी बुद्धियों को उत्तम कार्य करने के लिए प्रेरित करें।

This file is incomplete/under construction